3
तुलसीदास

रामचरितमानस का पाठ प्रायः हर घर में होता है। क्या आप जानते हैं कि इसकी रचना किसने की है? तुलसीदास ने। रामचरितमानस और तुलसी देशभर में प्रसिद्ध हैं। पढ़े लिखे हों या अनपढ़, गरीब हों या अमीर – रामचरितमानस और तुलसीदास में सबकी श्रद्धा है।

रामचरितमानस में राम की कथा है– अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम की। दशरथ के चार पुत्र थे। चारों में परस्पर गहरा प्रेम था। राम इनमें सबसे बड़े थे। सबके आदर के पात्र थे और राम भी सबसे प्रगाढ़ प्रेम करते थे। रामचरितमानस में राम और भरत के प्रेम की चर्चा अनेक स्थानों पर हुई है। अयोध्याकांड में यह प्रसंग बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है। इस पाठ में हम उसके एक छोटे से अंश का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भरत और राम के प्रेम की गहराई का वर्णन कर सकेंगे;
- बड़े भाई राम के प्रति भरत की आदर भावना का उल्लेख कर सकेंगे;
- भरत के चरित्र की विशेषताओं की सूची बना सकेंगे;
- निर्धारित उदाहरणों के आधार पर तुलसी की भाषा और शिल्प सौंदर्य की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

यह चित्र रामचरितमानस के किस सोपान से संबंधित है, बताइए।

चित्र 3.1

3.1 मूलपाठ

आइए, सर्वप्रथम संपूर्ण काव्यांश को एक बार पढ़ लें।

भरत का भ्रात प्रेम

(रामचरितमानस से उद्ध त)

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई।
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू।
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह-जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।
मो पर क पा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही।।

दो० महूँ सनेह सकोच बस, सनमुख कही न बैन।
दरसन त पित न आजु लगि, पेम पिआसे नैन।।२६०।।

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भा।।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली।।
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।

टिप्पणी

शब्दार्थ

अनुकूल अघाई	– पूर्णतः अपने पक्ष में
नीरज-नयन	– कमल जैसे नेत्र
पुलकि	– रोमांचित होकर
मुनिनाथ	– वसिष्ठ
कहब मोर	– मुझे जो कहना था
निबाहा	– निभा दिया, मेरी ओर से कह दिया
कोह	– क्रोध
सनेहू	– स्नेह
बिसेषी	– विशेष
खुनिस	– रंजिश, अप्रसन्नता
परिहरेऊँ न	– नहीं छोड़ा
जियँ जोही	– हृदय में देखा है
महूँ	– मैंने भी
कही न बैन	– बात नहीं कही
त प्ति	– त प्त
विधि	– विधाता
जननी मिस	– माँ के बहाने
बीचु पारा	– अंतर पैदा कर दिया
सुचाली	– सदाचारी
कुचाली	– दुराचारी
को भा	– कौन हुआ
फरइ	– फलती है
कोदव	– कोदो (एक प्रकार का मोटा अनाज)
सुसाली	– एक प्रकार का शालि नामक धान,
संबुक	– घोंघा
मुक्ता	– मोती
काहू	– किसी को भी
उदधि	– सागर
अवगाहू	– अथाह

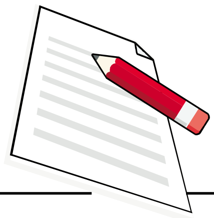

टिप्पणी

शब्दार्थ

अघ	– पाप
परिपाकू	– फल, परिणाम
काकू	– व्यंग्य
नीक	– अच्छा
हेरि	– देखकर
परिनामू	– परिणाम
सति भाऊ	– सच्चे मन से
प्रपंचु	– कपट

बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा।
गुरु गोसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू।।

दो० साधु सभाँ गुर प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।२६१।।

3.2 बोध प्रश्न

1. 'सिसुपन ते परिहरेउँ न संगू, कबहूँ न कीन्ह मोर मन भंगू'
   उपर्युक्त पंक्ति कौन किसके बारे में कह रहा है ?
   (क) कौन ....
   (ख) किसके बारे में ....
2. 'प्रभुक पा की रीति' किस पंक्ति से प्रकट हो रही है –
   (क) नीरज नयन नेह जल बाढ़े
   (ख) खेलत खुनिस न कबहूँ देखी
   (ग) हारेहुँ खेल जितावहिं मोही
   (घ) लागत मोहि नीक परिनामू
3. भरत माँ के प्रति अपराध भाव से ग्रस्त हैं, क्योंकि –
   (क) कैकेयी ने राम को वनवास दिया
   (ख) कैकेयी ने भरत से परामर्श नहीं किया
   (ग) भरत कैकेयी को भी चित्रकूट ले आया
   (घ) भरत ने कैकेयी को बुरा-भला कहा

3.3 आइए समझें

भरत का भ्रात प्रेम

आइए, 'भरत का भ्रात प्रेम' के प्रथम अंश को पुनः पढ़ें।

प्रसंग

आप यह तो जानते ही हैं कि सीता और लक्ष्मण सहित राम के वन चले जाने पर अयोध्यावासी बड़े दुखी हुए थे। राम के छोटे भाई भरत को सबसे अधिक दुख हुआ था। बता सकते हैं क्यों ? कैकेयी ने राजा दशरथ से राम के लिए वनवास और भरत के लिए राज्याभिषेक का वरदान माँगा था। भरत के लिए यह बात अकल्पनीय

थी। राजगद्दी पर तो बड़े भाई का अधिकार होता है, किंतु यहाँ उन्हें वनवास दे दिया गया। भरत को लगता था कि इस सब के दोषी वही हैं। इससे भरत को अपयश मिल सकता था। इसलिए भरत अपने कुल-गुरु वसिष्ठ और राजपरिवार सहित अयोध्या के नागरिकों को साथ लेकर राम को लौटाने के लिए वन की ओर चल पड़े। तुलसी ने रामचरितमानस के अयोध्याकांड में उसी अवसर का वर्णन किया है।

प्रथम अंश

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई।
गुरु साहिब अनुकूल अघाई।
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू।
कहि न सकहिं कछु करहिं
बिचारू।
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।
नीरज-नयन नेह-जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा।
एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ।
अपराधिहु पर कोह न काऊ।
मो पर क पा सनेहु बिसेषी।
खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू।
कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु क पा रीति जियँ जोही।
हारेहुँ खेल जितावहिं मोही।।
महूँ सनेह सकोच बस,
सनमुख कही न बैन।
दरसन त पित न आजु लगि,
पेम पिआसे नैन।

अर्थ

मुनि के वचन सुनकर और श्रीरामचंद्रजी का रुख अपने पक्ष में पाकर– गुरु तथा स्वामी को पूर्णतः अपने अनुकूल जानकर सारा बोझ अपने ही ऊपर समझकर भरतजी कुछ कह नहीं पा रहे थे। वे विचार करने लगे। शरीर से पुलकित होकर वे शरीर में सभा में खड़े हो गए। उनके कमल के समान नेत्रों में प्रेमाश्रुओं की बाढ़ आ गई। वे बोले– मेरा कहना तो मुनिनाथ ने निबाह दिया (जो कुछ मैं कह सकता था वह उन्होंने ही कह दिया)। इससे अधिक मैं क्या कहूँ? अपने स्वामी राम का स्वभाव मैं जानता हूँ। वे अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते। मुझ पर तो उनकी विशेष क पा और स्नेह है। मैंने खेल में भी कभी उनकी अप्रसन्नता नहीं देखी। बचपन से ही मैंने उनका साथ नहीं छोड़ा और उन्होंने भी मेरे मन को कभी नहीं तोड़ा (मेरे मन के प्रतिकूल कभी उन्होंने कोई काम नहीं किया)। मैंने प्रभु की कृपा करने की रीति को हृदय से भलीभाँति देखा है (अनुभव किया है)। मेरे हारने पर भी खेल में प्रभु जिताते रहे हैं। मैंने भी प्रेम और संकोचवश कभी उनके सामने मुँह नहीं खोला। प्रेम के प्यासे मेरे नेत्र आज तक प्रभु राम के दर्शन से त प्त नहीं हुए।

चित्र 3.2

व्याख्या

चित्रकूट में राम ने भरत के स्वभाव की बड़ी प्रशंसा की। उनका रुख देखकर वसिष्ठ ने भरत को संकेत दिया कि वे अपने हृदय की बात राम के समक्ष रखें।

यही तो भरत चाहते थे। वे ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में ही थे कि कब गुरु वसिष्ठ और राम दोनों अनुकूल हों। अवसर प्राप्त होने पर उनके शरीर में सिहरन हुई। वे सभा के समक्ष बोलने के लिए खड़े तो हुए पर बोलने से पूर्व उनकी आँखों से प्रेम के आँसू बह चले। फिर बोले– मुझे जो कहना था वह तो मुनियों में श्रेष्ठ गुरु वसिष्ठ ने स्वयं कह ही दिया है, मैं उससे अधिक क्या कहूँ। मैं अपने भाई राम के स्वभाव से

टिप्पणी

बचपन से ही परिचित हूँ। मैंने उन्हें कभी भी अपराधी पर क्रोध करते नहीं देखा। और मुझ पर तो उनकी विशेष क पा रही है। बचपन में आपस में खेलते समय भी मैंने उन्हें कभी अप्रसन्न नहीं देखा। मेरे बड़े भाई की मुझ पर सदैव इतनी अधिक क पा रही है कि यदि मैं कभी खेल हार जाता तो भी वे मुझे जिता ही देते थे। मैंने तो बचपन से ही कभी उनका साथ नहीं छोड़ा और सदा यह पाया कि उन्होंने मेरा मन कभी नहीं दुखाया। यह राम का बड़प्पन है कि वे कभी किसी का मन नहीं तोड़ते।

क्या आप बता सकते हैं कि भरत के इस कथन के पीछे क्या अभिप्राय हो सकता है ? जी हाँ ! यहाँ दो अभिप्राय प्रतीत होते हैं। एक तो यह कि वे स्पष्ट कह रहे हैं कि मैंने बचपन से ही राम का साथ कभी नहीं छोड़ा। अब इतनी दीर्घ अवधि के लिए उनका वियोग मैं कैसे सह सकता हूँ। दूसरा संकेत और भी महत्त्वपूर्ण है। वह है – *'कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू'* अर्थात् राम ने कभी भी भरत का दिल नहीं दुखाया। अतः आज भी उन्हें विश्वास है कि राम उनका मन नहीं तोड़ेंगे और उनके आग्रह पर वापस अयोध्या लौट चलेंगे।

किसी पर कृपा करने की राम की रीति भी भरत को ज्ञात है। उन्होंने उस रीति पर मनन किया है और पाया है कि वे तो हारे हुए को भी जिता देते हैं।

भरत कहते हैं कि मैंने प्रेम और संकोच के कारण उनके सामने कभी मुख नहीं खोला। शिष्टाचार की परंपरा रही है कि बड़ों के सामने उद्दंडता का व्यवहार नहीं किया जाता। बड़ों के सामने मुख खोलना उनका अनादर है, जो भरत ने कभी नहीं किया। वे तो बस राम का दर्शन ही करते रहे किंतु दर्शनों से भी आज तक त प्त नहीं हुए। उनकी आँखें सदा राम के प्रेम की प्यासी ही बनी रहीं।

अंश - 2

आगे की पंक्तियों को पुनः पढ़िए।

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा।
नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा।
अपनी समुझि साधु सुचि को भा।।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली।
उर अस आनत कोटि कुचाली।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली।
मुकता प्रसव कि संबुक काली।।
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू।
मोर अभाग उदधि अवगाहू।
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू।
जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा।
एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा।
गुरु गोसाइँ साहिब सिय रामू।
लागत मोहि नीक परिनामू।।

प्रसंग

यह भरत के शब्दों में राम के भ्रात स्नेह की स्म ति थी, जो उन्हें बार-बार याद आ रही थी। पर भरत के मन को बीच की घटनाओं की पीड़ा भी साल रही थी। उन्हें बार-बार अपनी माँ कैकयी की करनी भी याद आ रही थी और वे आत्मग्लानि से भर जाते थे। तुलसी ने भरत की इसी मनोदशा का वर्णन किया है।

अर्थ

भरत कहते हैं कि विधाता मेरा दुलार न सह सका। उसने नीच माता के बहाने (मेरे और स्वामी के बीच) अंतर डाल दिया। यह भी कहना आज मुझे शोभा नहीं देता; क्योंकि अपनी समझ से कौन साधु और पवित्र हुआ है ? (अर्थात जिसको दूसरे साधु और पवित्र मानें, वही साधु है, वही शुद्ध है) माता नीच है और मैं सदाचारी और साधु हूँ। ऐसा हृदय में लाना ही करोड़ दुराचारों के समान है। क्या कोदो की बाली

उत्तम धान फल सकती है ? क्या काली घोंघी मोती उत्पन्न कर सकती है? स्वप्न में भी किसी को दोष देने का लेश भी नहीं है। मेरा अभाग्य ही अथाह समुद्र है। मैंने अपने पापों का परिणाम समझे बिना ही माता को कटु वचन कहकर व्यर्थ ही जलाया। मैं अपने हृदय में सब ओर खोज कर हार गया (मेरी भलाई का कोई साधन नहीं सूझता)। एक ही प्रकार से मेरा भला है। वह यह है कि गुरु महाराज सर्वसमर्थ और रामजी मेरे स्वामी हैं। इसी से परिणाम मुझे अच्छा जान पड़ता है। साधुओं की सभा में गुरु वसिष्ठ और स्वामी राम के समीप इस पवित्र तीर्थ स्थान में मैं सत्य भाव से कहता हूँ। यह प्रेम है या प्रपंच (छल-कपट)? झूठ है या सच? इसे (सर्वज्ञ) मुनि वसिष्ठ जी और (अंतर्यामी) श्री रघुनाथजी जानते हैं।

व्याख्या

भरत का कथन अभी चल रहा है। उन्होंने राम की प्रीति का स्मरण किया, और उन्हें लगा कि विधाता उनके और राम के बीच गहरे प्रेम भाव को सहन नहीं कर सका। इसलिए उसने राम और भरत के स्नेह के बीच माता कैकेयी को उपस्थित कर मानों एक रुकावट डाल दी। भरत यह कह तो गए पर तुरंत ही उन्हें लगा कि यह कथन उन्हें शोभा नहीं देता। उन्हें ऐसा क्यों लगा होगा ? एक तो यही कि पुत्र होने के कारण माँ की निंदा करना उचित नहीं है, पर स्थिति ऐसी ही आ पड़ी है। दूसरा कारण यह भी है कि कोई अपने आपको सुजान कैसे कह सकता है। आशय यह है कि कोई यह न समझे कि भरत स्वयं को पवित्र और सज्जन मान रहे हैं। अपने मानने भर से कुछ नहीं होता, हाँ ! लोग मानें तब बात और है।

भरत कहते हैं – यह सोचना कि माँ बुरी है और मैं सदाचारी और सज्जन हूँ, ठीक नहीं है। ऐसा भाव मन में आना करोड़ों दुराचरणों जैसा है। 'कोटि कुचाली' पर ध्यान दीजिए। माँ को बुरा मानने का असद् विचार वस्तुतः करोड़ों असद् विचारों जैसा बुरा है। अब आप शंका कर सकते हैं कि कैकेयी ने राम को वनवास दिलाया था, इसका समाधान भरत कैसे करेंगे। भरत के पास इसके दो कारण हैं – पहला है कैकेयी के स्वभाव की विशेषता। भरत उदाहरण देकर पूछ रहे हैं– भला कोदो के पौधे से शालिधान की बालें कैसे आएँगी। इसे दूसरी कहावत से भी कह सकते हैं– बबूल के पेड़ पर आम कैसे लगेंगे। अर्थ यह भी है कि जब माँ में ही दोष है तो मैं निर्दोष कैसे हो सकता हूँ।

भरत स्पष्ट करते हैं कि स्वप्न में भी किसी को दोष देना ठीक नहीं। किसी का रत्तीभर भी दोष नहीं है, दोष तो बस भरत के भाग्य का है। मेरा दुर्भाग्य अथाह सागर है। उसकी कोई सीमा नहीं। कैकेई के द्वारा राम को बनवास का वरदान माँगना मेरे ही दुर्भाग्य सागर की एक लहर है। भरत को इतने से ही संतोष नहीं होता। अपने को कोसते हुए वे आगे कहते हैं– मैंने अपने पापों का परिणाम जाने बिना ही माँ को भला-बुरा कह कर उसके मन को चोट पहुँचाई। अब मैं अपने हृदय में अपनी भलाई के उपाय ढूँढ-ढूँढ कर हार गया हूँ। कोई उपाय सूझता ही नहीं। अब तो यही कहा जा सकता है कि समर्थ गुरु निकट बैठे हैं और भाई राम तथा भाभी सीता मेरे स्वामी हैं। इस सुयोग को देखकर मुझे विश्वास है कि जो भी परिणाम होगा वह अच्छा ही होगा।

उसी बात का और विस्तार करते हुए भरत कहते हैं कि यहाँ पर सज्जनों की सभा बैठी है, गुरु वशिष्ठ और स्वामी राम निकट बैठे हैं, यह स्थान चित्रकूट भी पवित्र तीर्थस्थल है और मैं जो कह रहा हूँ उसके पीछे भी सात्विक भाव है। मुनिवर वसिष्ठ जी और राम यह भली-भाँति जानते हैं कि मेरी बातें प्रेम से भरी हैं या छल से, झूठी हैं या सच्ची।

टिप्पणी

आइए, तुलसीदास की काव्य-कला की बानगी भी देखें :

1. भरत जब बोलने खड़े होते हैं तो उनकी आँखें प्रेम से डबडबा जाती हैं। पर कवि उसे अपनी शैली में कहता है – *'नीरज नयन नेह जल बाढ़े।'* कमल जैसी आँखों में स्नेह का जल भर गया। स्नेहाधिक्य से भावावेश के कारण आँखों से आँसू उमड़ आए।

   उपमा और रूपक अलंकार की निकटता देखिए –

   यहाँ पर आँखों की उपमा कमल से दी गई है, इसलिए 'नीरज नयन' में उपमा अलंकार और 'नेह जल' में रूपक अलंकार है। उपमा और रूपक के बारे में तो आप रैदास वाले पाठ में पढ़ ही चुके हैं।

   'नीरज' के समान कोमल सुंदर आँखों में (उपमा) नेह का जल (रूपक) बढ़ गया है।

2. बड़ी विनम्र शैली में वाक् चातुरी (बोलने की समझदारी) की झलक देखिए–

   ''मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ, अपराधिहु पर कोह न काऊ।।
   मों पर क पा सनेहु बिसेखी ....

   मैं राम के स्वभाव को जानता हूँ, यह कहने के लिए भरत उन्हें निज नाथ (मेरे स्वामी) कहते हैं। भाई-भाई के बीच भी बड़े भाई को स्वामी मानने का भाव है और स्वामी के स्वभाव में स्वामित्व वाला बड़प्पन या अहंकार नहीं है। अपराधी पर भी क्रोध न करना उनका स्वभाव है। यहाँ 'अपराधी' शब्द को तुलसी जानबूझ कर लाए हैं। संकेत यह है कि भरत से (उसकी माँ से) जो हुआ है वह अपराध से कम नहीं, पर राम का स्वभाव है कि अपराधी पर क्रोध न करना। इस जानकारी से ही भरत निश्चित नहीं कर देते, वे यह भी कहते हैं कि मुझ पर राम की विशेष क पा रही है, अतः वे बिल्कुल क्रोध नहीं करेंगे और मुझे क्षमा कर देंगे।

3. रामचरित मानस में भरत अपनी माँ को तब बहुत बुरा भला कहते हैं, जब उन्हें ननिहाल से लौट कर अयोध्या की घटनाओं की सूचना मिलती है। वह क्रोध और आवेश तात्कालिक था। वे माँ पर बरस पड़े थे और इस प्रकार वे माँ के प्रति दुर्व्यवहार के दोषी हो गए थे। तुलसी उन्हें इस आक्षेप से मुक्त कराना चाहते हैं, इसलिए यहाँ भरत से कहलाते हैं –

टिप्पणी

सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।

4. अंतिम दोहे में भी बड़ा अर्थ-गांभीर्य है। भरत यह आश्वासन देना चाहते हैं कि उनकी बातों में छल कपट नहीं है, वे सत्य बोल रहे हैं। प्रमाण स्वरूप स्पष्ट करना चाहते हैं कि वैसे ही सामान्य स्थितियों में भी छल या झूठ संभव नहीं फिर यहाँ तो ऐसी पाँच स्थितियाँ हैं, जिनमें झूठ बोलने का प्रश्न ही नहीं उठता, जैसे –

   1. सज्जनों की सभा
   2. कुल-गुरु वसिष्ठ की निकटता
   3. स्वामी राम और सीता का सान्निध्य
   4. चित्रकूट जैसा पावन तीर्थ
   5. भरत के मन का सात्विक भाव

   ऐसे वातावरण में सामान्यतः कोई भी झूठ नहीं बोल सकता, अतः भरत जो कह रहे हैं, उस पर अविश्वास का कोई कारण ही नहीं।

5. तुलसीदास का रामचरित मानस रामकथा के माध्यम से आदर्श व्यवहार और आचरण की सीख भी देता है। इस अंश में एक ओर भाइयों के परस्पर प्रेम की और दूसरी ओर गुरुजनों का सम्मान करने की सीख है, जो आज के संदर्भों में भी उपयुक्त और प्रासंगिक है।

पाठगत प्रश्न 3.1

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प का चयन कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

1. भरत के अनुसार कौन-सी विशेषता राम के स्वभाव की है?
   (क) वे अपराधी पर क्रोध नहीं करते हैं।
   (ख) खेलते समय जीते हुए को भी हरा देते हैं।
   (ग) वे भरत का दिल दुखाते हैं।
   (घ) वे लक्ष्मण से अधिक प्रेम करते हैं।

2. 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' कथन में कौन-सा अलंकार नहीं है ?
   (क) उपमा (ग) रूपक
   (ख) उत्प्रेक्षा (घ) अनुप्रास

3. रामचरित मानस में सबसे अधिक किस छंद का प्रयोग किया गया है ?
   (क) सवैया (ग) चौपाई
   (ख) कवित्त (घ) घनाक्षरी।

3.4 शिल्प सौंदर्य

तुलसी की काव्य कला की बानगी आप देख चुके हैं। भाव और शिल्प क्षेत्रों में वे बेजोड़ हैं। आइए यहाँ काव्य-शिल्प की द ष्टि से एक बार पुनः अवलोकन करें।

1. **अलंकारों का सहज प्रयोग :** तुलसी की कविता में भाव-वर्णन के साथ-साथ अलंकार स्वाभाविक रूप में पिरोए गए हैं, थोपे नहीं गए। जैसे :

(क) 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' – नीरज के समान भरत के नेत्रों में स्नेह का जल बढ़ गया। उपमा, रूपक अनुप्रास का सहज सौंदर्य।

(ख) पग-पग पर **अनुप्रास** के सहज प्रयोग में भी तुलसी सिद्धहस्त हैं; विशेष कर छेकानुप्रास (केवल एक बार आव त्ति) में जैसे –

– *सुनि **मुनिवचन राम रुख पाई***

– *पुलकि **सरीर सभाँ** भए ठाड़े*

– ***खेलत खुनिस** न कबहूँ देखी।*

वस्तुतः ऐसे प्रयोग यत्र-तत्र प्रचुर मात्रा में हैं। आप स्वयं खोजकर लिखिए।

व त्यनुप्रास–एकाधिकबार आव त्ति का एक उदाहरण दर्शनीय है:

– *हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा।*
एकहि भाँति भलेहि भल मोरा।।

(ग) **उदाहरण/द ष्टांत** – *फाइ कि कोदव बालि सुसाली।*
मुकता प्रसव कि संबुक काली।।

(घ) **उपमा** – मोर अभाग उदधि अवगाहू।

2. **नादात्मकता** – मधुर वर्णों के प्रयोग से कविता में नादात्मकता भी तुलसी की कविता का प्रमुख गुण है। जैसे :

- *सुनि मुनि वचन राम रुख पाई*
- *नीरज नयन नेह जब बाढ़े*
- *मातु मंदि मैं साधु सुचाली*
- *अपनी समुझि साधु सुचि को भा*
- *जारिउँ जायँ जननि कहि काकू*

3. **साभिप्राय प्रयोग** – तुलसी अनेक शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द का जानबूझ कर चयन करते हैं। इससे कविता में अर्थ गांभीर्य भी आ गया है। जैसे :

साधु सभाँ गुरु प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।

टिप्पणी

उपर्युक्त दोहे में 'झूठ' न बोलने के लिए पाँच बहुत ही सबल कारण एक दोहे में पिरोए गए हैं।

4. **प्रांजल अवधी** – तुलसीदास ने मानस की रचना अवधी भाषा में की है, किंतु उनकी अवधी बहुत मधुर प्रांजल शब्दावली से युक्त है– जैसे :

   पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।
   नीरज नयन नेह-जल बाढ़े।।

5. **दोहा-चौपाई छंद** – दोहा और चौपाई तुलसी के प्रिय छंद हैं। इनसे कथा-प्रवाह में सहायता मिलती है और पाठक/श्रोता रस-विभोर हो जाता है।

रामचरित मानस में प्रमुख रूप से दोहा तथा चौपाई छंदों का प्रयोग किया गया है। दोहा छंद के बारे में तो आप रैदास को पढ़ते हुए जान ही चुके हैं। चौपाई के बारे में संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है। आइए, इसे समझें।

चौपाई

चौपाई एक प्रकार का मात्रिक छंद है। इसमें दो चरण होते हैं। दोनों चरणों की मात्राएँ बराबर (16–16) होती हैं। इसलिए इसे मात्रिक समछंद भी कहते हैं।

इस छंद के अंत में दो गुरु वर्णों का प्रयोग आवश्यक होता है।

I I I ISI IS I I SS	
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।	= 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु
S I | | | | | S | | | S S	
नीरज नयन नेह जल बाढ़े।।	= 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु

चौपाई छंद का प्रयोग तुलसीदास के रामचरित मानस तथा जायसी के पद्मावत में अधिक पढ़ने को मिलता है।

3.5 आइए, स्वयं पढ़ें

आपने तुलसी के 'रामचरित मानस' के कुछ अंशों को समझ लिया है।

तुलसी के समान ही मलिक मुहम्मद जायसी ने भी अवधी में काव्य रचना की है और दोहा और चौपाई छंदों को अपनाया है। आइए, जायसी की कुछ पंक्तियों का भी आनंद लें :

फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झझकोरा।।
तरिवर झरहिं, झरहि बन ढाँखा। भई ओनंत फूलि फरि साखा।।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। मो कह भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्हि जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत मरत मोहिं रोष न आवा।।
राति दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।चौ।।

शब्दार्थ

सीउ – शीत
पियर पात – पीला पत्ता
ओनंत भई – झुक गई
मोहि तन लाइ दीन्हि जस होरी होलिका – मेरा तन विरह से सा जल रहा है।
कंत – पति

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन उड़ाउ'।
मकु तेहि मारग उड़ि परौ, कंत धरैं जहँ पाँउ।।दो।।

अवधी की उपर्युक्त पंक्तियों को आपने पढ़ा। क्या आप इसका केंद्रीय भाव समझ पाए ? फागुन का (वसंत का) मौसम आया है। चारों ओर फूलों-फलों से लदी डालें झुक गई हैं और नायिका अपने को पीले पत्ते-सा कह रही है? सोचिए क्यों? क्योंकि उसका पति उससे दूर है। वह विरह की अग्नि में जल रही है, जैसे होली जल रही हो। उसे उसका पति जलता हुआ भी देख ले तो उसे जल मरने का पश्चात्ताप नहीं होगा।

अंत में दोहे को एक बार और पढ़िए। जायसी का यह दोहा बहुत प्रसिद्ध है। विरहिनी की इच्छा क्या है ? जलकर राख हो जाना ही नहीं, वह राख उड़कर कहाँ गिरे, इस पर भी उसका विशेष आग्रह है। पढ़कर बताइए कि वह राख के रूप में कहाँ गिरना चाहती है ? क्यों ?

शब्दार्थ

जारौं छार – जलाकर राख बना दूँ
उड़ाउ – उड़ा लो
मकु – थोड़ा सा
कंत धरै जहँ पाउँ – मेरे पति जहाँ अपने पैर रखें

पाठगत प्रश्न 3.2

आइए, अब इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. वसंत में भी नायिका का शरीर पीले पत्ते-सा दुर्बल और कांतिहीन क्यों हो गया?
2. वसंत में व क्षों में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं?
3. जब लोग होली खेल रहे थे, तब नायिका होली के समान क्यों जल रही थी?
4. रात-दिन वह क्या सोचा करती है?
5. राख बन जाने पर वह उड़कर कहाँ गिरना चाहती है ? क्यों?

3.6 आपने क्या सीखा

1. राम और भरत में परस्पर गहरा प्रेम है। भरत के मन में राम के प्रति आदर भाव है और वे चाहते हैं कि राम अयोध्या वापस लौट चलें और उनके साथ ही रहें।
2. आवेश में कैकई के प्रति कहे वचनों के लिए भरत के मन में पश्चात्ताप भी है।
3. तुलसी की भाषा और कथन भंगिमाओं की भी आपने अनेक विशेषताएँ पढ़ीं। कवि शब्दों का प्रयोग बड़ी चातुरी से करता है। मनोभावों के चित्रण में वह सिद्धहस्त है।
4. अनुप्रास के अतिरिक्त उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, द ष्टांत आदि अलंकारों का तुलसी दास ने अपने काव्य में सुंदर प्रयोग किया है।
5. तुलसी ने रामचरित मानस की रचना अवधी भाषा में की है।

3.7 योग्यता विस्तार

तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के राम-भक्त कवि हैं। उनका जन्म संवत् 1589 (1532 ई.) में उत्तर प्रदेश के सोरों नामक स्थान में हुआ। कहा जाता है कि उनका प्रारंभिक जीवन बड़ी कठिनाइयों में बीता। बाबा नरहरिदास के वे शिष्य थे और उन्हीं से राम कथा में दीक्षित हुए।

तुलसीदास के लिखे हुए छोटे-बड़े बारह ग्रंथों का उल्लेख आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है। इनमें प्रमुख हैं – दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरित मानस और विनय पत्रिका। सभी रचनाओं में भावों की विविधता तुलसी की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के आदर्शों को जनता के सामने रखा। तुलसी की भक्ति भावना, सीधी, सरल और साध्य है। राम उनके आदर्श हैं और मर्यादा पुरुष हैं। रामचरित मानस में तुलसी ने राम और शिव दोनों को एक-दूसरे का भक्त दिखाकर वैष्णवों और शैवों में समन्वय करने का प्रयास किया। राम कथा को लेकर संस्कृत और हिंदी में अनेक रचनाएँ हैं, परंतु भरत का जो रूप तुलसी ने दिखाया है, वह रघुवंश या वाल्मीकि रामायण में भी नहीं है।

भावों की विविधता के साथ-साथ तुलसी की शैली में भी विविधता है। सूरदास की पद-शैली, चारणों की छप्पय, कवित्त, सवैया पद्धति-दोहा-नीतिकाव्यों की भक्ति पद्धति और प्रेमाख्यानों की दोहा-चौपाई पद्धति आदि का सफल प्रयोग तुलसी ने किया है। तुलसी ने अपने समय की दोनों साहित्यिक भाषाओं– अवधी और ब्रज का प्रयोग किया। मानस के अतिरिक्त अधिकांश रचनाओं की भाषा ब्रज है, जिस पर तुलसी का अद्‌भुत अधिकार है।

3.8 पाठांत प्रश्न

1. 'बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा– 'भरत की इस मान्यता का क्या कारण है?
2. 'साधु सभाँ गुरु-प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ'– कहकर भरत क्या प्रमाणित करना चाहते हैं?
3. 'राम और भरत का प्रेम अद्वितीय था।' तुलसी के कथनों से प्रमाण देकर सिद्ध कीजिए।
4. भरत को माँ के प्रति आक्रोश क्यों था ? अपनी प्रतिक्रिया को वे उचित क्यों नहीं मानते ?
5. तुलसी की काव्य-शैली की दो विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए।
6. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित प्रमुख अलंकारों का उल्लेख कीजिए :

   (क) सुनि मुनि वचन राम रुख पाई

   (ख) नीरज नयन नेह जल बाढ़े

(ग) मोर अभाग उदधि अवगाहू।

(घ) मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।।

7. 'भरत का भ्रात प्रेम' शीर्षक वाक्यांश की आज के संदर्भों में प्रासंगिकता बताइए।

8. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।

(ख) साधु सभाँ गुरु प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।

9. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त छंद का नाम लिखिए–

(क) शांति दिवस बस यह जिउ मोरे।

लगौं निहोर कंत अब तोरे।।

(ख) राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।

तुलसी भीतर बाहरेहु, जो चाहसि उजियार।।

10. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
चितवति चकित चहूँदिसि सीता। कहँ गए न प किसोर मनु चिंता।।
लता ओट सब सखिन्ह लखाए। श्यामल गौर किसोर सुहाए।।
देखि रूप लोचन ललचाने। हरणे जनु निज निधि पहिचाने।।
थके नयन रघुपति छवि देखें। जनु पलकन्हिं परिहरीं निमेषें।।

(क) उपर्युक्तऽकविता किस छंद में लिखी गई है?

(ख) इसमें श्यामल और किसोर शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुए हैं?

(ग) किसका रूप देखकर सीता की आँखें ललचाने लगीं?

(घ) 'पलकन्हिं परिहरी निमेषें' की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

3.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क) भरत, (ख) राम 2. (ग) 3. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. (क) 2. (ख) 3. (ग)

3.2 1. अपने पति से वियोग के कारण

2. शाखाएँ फूलों और फलों से लद जाती हैं। व क्ष प्रसन्न जान पड़ते हैं।
3. वह विरह की आग में जल रही थी
4. वह रात-दिन कामना करती है कि जैसे भी हो उसका पति उसे मिले।
5. जिस मार्ग से होकर उसका पति चले, वह उस मार्ग पर राख के रूप में बिछ जाना चाहती है। उसकी इच्छा है कि इस प्रकार मरने के बाद ही सही, उसका पति से मिलन तो हो पाएगा।